REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2019

दुरस्थ शिक्षा में ग्रंथालय की भूमिका

Dr. Shalini Shukla
Pt. Sundarlal Sharma (Open) , University C.G.Bilaspur.

Abstract

शिक्षा समाज का दर्पण है। शिक्षा ही राष्ट्र का प्रतिबिंब होती हैं। शिक्षा के अवसरों तथा उनके माध्यम से अध्येताओं का अधिगम निस्पत्तियों का निर्धारण होता है। शहरी अध्येता आसानी से आवश्यक जानकारी प्राप्त करने प्रवीण होते हैं। दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों के अध्येताओं को शिक्षा तथा पाठ्यक्रमों, कार्यक्रमों आदि की सूचना मिल पाना कठिन हो जाता है। भारत के अनेक ग्रामों में आवागमन के संसाधन एवं डाक सेवाएं की कमी है। कुछ सीमा तक रेडियों, दूरदर्शन एवं दूरभाष के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में सूचनाएं पहुंचती है।

अतः दुरस्थ शिक्षा की स्थापना का मुख्य उद्देश्य प्रदेश के दूरस्थ एवं ग्रामीण अंचलों में ''शिक्षा आपके द्वार'' एवं साक्षरता की दर में वृद्धि करना करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति में दुरस्थ शिक्षा के लिए ग्रंथालय को एक महत्वपूर्ण अवयव के रूप में जाना जा सकता है। ग्रंथालय सेवा के बिना शिक्षा के क्षेत्र में निहित उद्देश्यों की पूर्ति नहीं की जा सकती। इसलिए भारत सरकार ने 13 राज्यों आंध्रप्रदेश, राजस्थान, बिहार, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, गुजरात, कर्नाटक, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडू, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़, उत्तरांचल एवं असम में मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना की है।

प्रस्तावना—

समाजिक परिवर्तन लाने के लिए विकास की प्रत्येक क्षेत्र का अपना महत्व है, जिसमें समाजिक सुधार का एक पहलू भी इसमें समाहित होता हैयह भौतिक उपलब्धियों के साथ साथ समाजिक बुराइयों को भी दूर करने में सहायक होता है। बेरोजगारी तथा गरीबी दूर करने के प्रयासों के तहत विविध योजनाओं के अलावा ''जवाहर रोजगार योजना, दुरस्थ शिक्षा एवं प्रौढ़ शिक्षा जैसे विशेष कार्यक्रम प्रारंभ किए गए। आधुनिक युग के साथ विकास एवं समाजिक परिवर्तन की अवधारणा के तहत दसवीं पंचवर्षीय योजना में राष्ट्रीय विकास परिषद ने विविध विकास कार्यक्रमों को गति दी है जिससे समाजिक परिवर्तन की सकारात्मक दिशा को गति दी जा सके। भारत में विश्वविद्यालय स्तर पर दूरस्थ शिक्षा सन् 1992 में दिल्ली विश्वविद्यालय के पत्राचार पाठ्यक्रम के रूप में प्रारंभ की गई। माध्यमिक शिक्षा स्तर पर दूरस्थ शिक्षा का प्रारंभ सन् 1965 से प्रारंभ हुआ। 80वें दशक तक भारत के अनेक परंपरागत विश्वविद्यालयों ने पत्राचार के माध्यम से उच्च शिक्षा की सुविधा प्रदान की। यह विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा के विस्तार तक ही प्रभावी रहे, लेकिन दूरस्थ शिक्षा की पूर्ण व्यापकता एवं विशेषताओं को प्राप्त नहीं कर सके। देश में मुक्त विश्वविद्यालयों की संभावना एवं उपादेयता को सुनिश्चित करने के लिए भारत सरकार ने प्रत्येक प्रमुख राज्य में एक खुला/मुक्त विश्वविद्यालय स्थापित करने की नीति बनाई। इस दिशा में प्रथम मुक्त विश्वविद्यालय 1982 में बी.आर. अम्बेडकर खुला विश्वविद्यालय की स्थापना हैदराबाद (आंध्र प्रदेश) में की गयी। 1985 में संसद द्वारा पारित अधिनियम के अंतर्गत राष्ट्रीय स्तर पर इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना, नई दिल्ली में की गयी।

वर्तमान में भारत में एक राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय एवं 13 राज्य स्तरीय खुला/मुक्त विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा के प्रचार–प्रसार में कार्यरत है। राज्य स्तरीय खुला/मुक्त

विश्वविद्यालय का क्रमानुसार संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत है –

क्र.	विश्वविद्यालय का नाम	स्थापना	स्थान	राज्य
1	डॉ. बी.आर. अंबेडकर मुक्त विश्वविद्यालय	1982	हैदराबाद	आंध्रप्रदेश
2	वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय	1987	कोटा	राजस्थान
3	नालन्दा मुक्त विश्वविद्यालय	1987	पटना	बिहार
4	यशवंतराव चौहान महाराष्ट्र मुक्त विश्वविद्यालय	1989	नासिक	महाराष्ट्र
5	मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय	1992	भोपाल	मध्यप्रदेश
6	डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर मुक्त विश्वविद्यालय	1994	अहमदाबाद	गुजरात
7	कर्नाटक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय	1996	मैसूर	कर्नाटक
8	नेताजी सुभाष मुक्त विश्वविद्यालय	1997	कोलकाता	पं. बंगाल
9	उत्तर प्रदेश राजर्षी टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय	1999	इलाहाबाद	उत्तर प्रदेश
10	तमिलनाडू मुक्त विश्वविद्यालय	2002	चेन्नई	तमिलनाडू
11	पं. सुंदरलाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय	2005	बिलासपुर	छत्तीसगढ़
12	उत्तरांचल मुक्त विश्वविद्यालय	2006	हल्दानी	उत्तरांचल
13	कृष्णकांत हैन्डक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय	2006	गौहाटी	असम

मुक्त विश्वविद्यालयों के ग्रंथालय के महत्व एवं शिक्षार्थियों के उपयोग को दृष्टिगत रखते हुए विश्वविद्यालय के ग्रंथालय प्रणाली में सुधार की आवश्यकता है। दूरस्थ शिक्षार्थियों को ग्रंथालय एवं सूचना सेवा उपलब्ध कराने के लिए त्रिस्तरीय ग्रंथालय प्रणाली को लागू कर ग्रंथालयीन सेवा में गुणवत्ता एवं सुधार लाया जा सकता है।

त्रिस्तरीय ग्रंथालय सेवा –

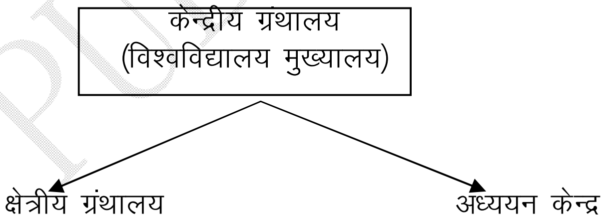

केन्द्रीय ग्रंथालय –

केन्द्रीय ग्रंथालय विश्वविद्यालय के मुख्यालय में स्थित होनी चाहिए एवं ग्रंथालय की सभी पुस्तकों का संपूर्ण विवरण संबंधी जानकारी आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी माध्यम इंटरनेट पर उपलब्ध हों। जिससे संबंधित विश्वविद्यालय के विद्यार्थी ग्रंथालय के समस्त पुस्तकों की पाठ्यक्रम संबंधी जानकारी प्राप्त कर सके।

क्षेत्रीय ग्रंथालय –

विश्वविद्यालय अपने क्षेत्राधिकार में अनेक क्षेत्रीय ग्रंथालय की स्थापना करती है। जिसमें विश्वविद्यालय से संबंधित पाठ्यक्रम संबंधी जानकारी एवं पाठ्यक्र संबंधी पुस्तकें उपलब्ध होती है। इन क्षेत्रीय ग्रंथालय में इंटरनेट की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए, जिससे विद्यार्थी केन्द्र ग्रंथालय में उपलब्ध पुस्तकों, सामयिकों, पत्र–पत्रिकाओं आदि की जानकारी प्राप्त कर सके और अपनी आवश्यकतानुसार केन्द्रीय ग्रंथालय से पुस्तकें एवं पाठ्य सामग्री की मांग कर सकें।

LBP PUBLICATION

ग्रंथालय अध्ययन केन्द्र –

प्रत्येक केन्द्रीय एवं क्षेत्रीय ग्रंथालय में अध्ययन केन्द्र की सुविधा उपलब्ध हो। इन अध्ययन केन्द्रों में योग्य परामर्शदाताओं की नियुक्ति की जानी चाहिए, जो उपयोगकर्ताओं को उनकी आवश्यकतानुसार सेवाएं एवं सूचना प्रदान कर सकें।

मुक्त विश्वविद्यालयों की स्थापना का मुख्य उद्देश्य प्रदेश के दूरस्थ एवं ग्रामीण अंचलों में शिक्षा आपके द्वार एवं साक्षरता की दर में वृद्धि करना करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति में विश्वविद्यालय ग्रंथालय एक महत्वपूर्ण अवयव के रूप में माना जा सकता है। ग्रंथालय सेवा के बिना शिक्षा के क्षेत्र में निहित उद्देश्यों की पूर्ति नहीं की जा सकती। अतः विश्वविद्यालय ग्रंथालय सेवा को संपूर्ण विकसित एवं आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित करना चाहिए। साथ ही राज्य सरकार मुक्त विश्वविद्यालय ग्रंथालय के उद्देश्य को पूर्ण करने हेतु अधिकाधिक वित्तीय प्रबंध सुनिश्चित करे।

दूरस्थ औपचारिक शिक्षा के विपरित वह व्यवस्था है, जिसमें विद्यार्थी को किसी भी तरह से विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में शिक्षा ग्रहण करने आना पड़ता है, बल्कि व अपने–अपने स्थान पर रहते हुये आकाशवाणी, दुरदर्शन, टेपरिकार्डर, आडियों एवं विडियो कैसेटों और ऑन–लाइन द्वारा ज्ञान प्राप्त करते रहते है।

दुरस्थ शिक्षा : शिक्षण का एक तरीका है जो सीखने का ढ़ंग बताता है। यह प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं की गति से ज्ञान अर्जित करने का अवसर देता है। यह प्रभावी ढंग से सभी परिस्थितियों में सीखने का अवसर प्रदान कर औपचारिक प्रणाली को पूरक बना सकती है। दुर अधिगम तंत्र न केवल लागत प्रभावी अपित्तु लागत कुशल भी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति– 1986 : प्रोग्राम ऑफ एम्सन में दिया गया है कि दूर शिक्षा उच्च शिक्षा के अवसरों में वृध्दि करती है, लागत प्रभावी है तथा नम्य व नवापारात्मक शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा देती है।

दूर शिक्षा प्रणाली पूरे देश के विद्यार्थियों को चाहे वे प्रत्यक्ष रूप से विश्वविद्यालयों, विद्यालयों के छात्र भले ही न हो, अच्छा गुणवता वाले कार्यक्रम कोर्स प्रदान करती है। यहॉ से वितरित मुद्रित सामग्री तथा रेडियों, दृष्य–श्रव्य व दुरदर्शन कार्यक्रम एवं ऑन लाईन शिक्षा पर शिक्षार्थियों के अलावा अन्य विद्यार्थियों के लिये भी लाभदायक हो सकती है। संचार माध्यमों को और शसक्त व उपयोगी बनाया जाना चाहिए, क्योंकि ये दुरस्थ शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

दूरस्थ शिक्षा को और भी अधिक प्रभावशाली बनाने में पुस्तकालय भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। मुख्यालय में केन्द्रीय ग्रंथालय होना तो अनिवार्य है किन्तु छात्रों के हित के लिये कुछ अध्ययन केन्द्रो को मॉडल अध्ययन केन्द्र के रूप में विकसित किया जाना चाहिए, जिससे एक पुस्तकालय की भी व्यवस्था हो जहॉ पुस्तकों के साथ–साथ **E-Library** की भी व्यवस्था हो। दुरवर्ती शिक्षा में छात्रों के लिये सभी प्रकार की सूचनाओं की व्यवस्था पुस्तकालय में होनी चाहिए।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय **(IGNOU)** के द्वारा अपने शिक्षार्थियों को अधिगम की अधिकाधिक तथा प्रभाव सहायता सेवाएं उपलब्ध कराने की दृष्टि से बहु माध्यम अधिगम केन्द्र स्थापित करने का विचार वर्ष 1997 में प्रस्तुत किया था। इन केन्द्रो की स्थापना का प्रमुख उदेश्य दुरस्थ शिक्षार्थियों को भूगतान करने पर बहु–आयामी अधिगम साधनों को सहजता से उपलब्ध कराकर उनकी पहुँच आधुनिकतम इलैक्ट्रानिक, सूचना तथा संप्रेषण तकनीकी तक को सुनिश्चित करना है। दुरस्थ शिक्षा प्रणाली के माध्यम से शिक्षा दे रही अन्य संस्थाएँ मुक्त विश्वविद्यालय तथा सामाजिक प्रणालियाँ भी इन्दिरा गाँधी मुक्त विश्वविद्यालय **(IGNOU)** के इस विचार का अनुकरण करके अपने छात्रों को इस प्रकार की सुविधाओं को प्रदान करने हेतु प्रयास कर सकती है। इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा स्थापित बहु–आयाम अधिगम केन्द्रो की उपयोग करने की सुविधा अपने छात्रों को उपलब्ध कराने के लिये इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय से भागेदारी कर सकती है।

संचार के माध्यम से सूचना केन्द्रों से छात्रों की समस्याओं को सुनकर आसानी से निराकृत किया जा सकता है, नवीन सूचना प्रद्यौगिकी से आज के यूग में कांतिकारी परिर्वतन हूआ है। इसमें प्रभावी भूमिका – संचार,कंप्यूटर्स,नेटवर्किंग है, दूर शिक्षा में ऑन–लाइन शिक्षक का प्रर्याप्त महत्व है जिसमें ई–मेल, इंटरनेट विश्वव्यापी वेब को शिक्षा का माध्यम बनाया जाता है। इस माध्यम से उच्च शिक्षा को व्याख्यान कक्ष की भौतिक सीमाओं से मुक्त करने की क्षमता है। एक तरफ जहॉ विद्यार्थी ऑन–लाइन व्याख्यान और अनुक्रियात्मक

बहुमाध्यम पाठ्य पुस्तकों के द्वारा अपना मार्ग प्रशस्त कर रहा है। वहीं दूसरी तरफ विश्व इस प्रश्न से संघर्ष कर रहा है कि किस तरह यह सुनिश्चित किया जाए की नवीन संचार माध्यमों से जो शिक्षा विद्यार्थी ग्रहण कर रहा है। वह औपचारिक संपर्क शिक्षण के समान या उससें उत्तम है या नही। ग्रंथालय सूचना प्रबंधन का एक महत्वपूर्ण पक्ष है ,दूरवर्ती शिक्षा भी नई सूचना एवं ज्ञान का सतत् विकास ही समाज को प्रगति के मार्ग पर ले जा सकते है इसके माध्यम से नए ज्ञान का सृजन मानव का विकास सभंव है। सूचना और ज्ञान दोनो दुरवर्ती शिक्षा एवं ग्रंथालय के माध्यम से सहज हो सकता है

दूरवर्ती शिक्षा के संदर्भ में बहूसूचना– माध्यमों की अहम भूमिका है। दूरवर्ती शिक्षा के अंतर्गत छात्रों को विभिन्न विषयो का मानक मुद्रित सामग्री प्रदान की जाए, विभिन्न विषयों के विद्वानों द्वारा मौखिक रूप से दिए गए व्याख्यान रेड़ियों और टी.वी. पर प्रसारित किया जाए तथा उनकी सी.डी./कैसेट छात्रों को आगामी से उपलब्ध करायें जाए तथा आधुनिक सूचना प्रोद्योगिकी, मुख्यरूप से फैक्स, इंटरनेट और ई–मेल द्वारा मानक स्तर की पाठ्य–सामग्री एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचायें जाए। छात्र इंटरनेट के माध्यम से विषय से संबंधित संपूर्ण जानकारी कुछ क्षणों में ही प्राप्त कर सकते है। इसके अतिरिक्त विडियो कान्फ्रेसिंग द्वारा विभिन्न स्थानों से आए विषेशज्ञों से परस्पर संवाद और चर्चा करके छात्र अपनी समस्याओं के बारे में विशेषज्ञो से घर बैठे ही सीधे बातचीत द्वारा, समाधान प्राप्त कर सकते है। इस संबंध में सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा ऐसे विज्ञापन और समाचार आदि विभिन्न समाचार पत्रो, रेडियो तथा दुरदर्शन आदि से विज्ञापित किया जाए ताकि दुरवर्ती शिक्षा पद्वति से शिक्षा प्राप्त कर रहे एवं शिक्षा प्राप्त करने के इच्छुक छात्र तत्संबंधी जानकारी प्राप्त कर सकें।

दुरवर्ती शिक्षा की बढ़ती हुई मांग को पुरा करते और साथ ही दुरवर्ती शिक्षा के गुणवता स्तर के वृद्धि सुनिश्चित करने में वर्तमान इलैक्ट्रानिक आदि अत्याधुनिक माध्यमों के सम्पत्व दुरवर्ती शिक्षा का उत्तरोत्तर प्रचार–प्रसार बढ़ता जायेगा और देश में सभी आयु और सभी वर्ग के तथा सभी विषयों के शिक्षार्थी इससे अधिकाधिक लाभान्वित हो पायेंगें। छात्रों से संयोजन के लिए ग्रंथालय के सूचना केन्द्र एक उचित माध्यम है, लोगो की मोबाइल पर निरर्भरता बढ़ती जा रही है, दूरस्थ शिक्षा को स्वतंत्र शिक्षा भी कहा जा सकता है,जिसमे व्यक्ति कहीं भी अपनी सुविधा से शिक्षा ग्रहण कर सकता है, अपनी इच्छा के अनुरुप बिना विद्यालय,महाविद्यालय गये ही ज्ञान अर्जित का सकता है। पत्राचार भी दूरस्थ शिक्षा का एक अंग है, जो व्यक्ति जीवन प्रर्यन्त शिक्षा से जुड़े रहना चाहते है, वह कभी भी प्रवेश लेकर अपना ज्ञान बढ़ा सकते है, इसमें आयु सीमा की बाध्यता नही होती है। दूरस्थ शिक्षा में शिक्षक ण्वं छात्र के बीच अन्तःक्रिया नहीं होती है न ही शिक्षण का उचित माहौल बन पाता है, जिस कारण छात्र को विभिन्न प्रकार की समस्यायों का सामना करना पड़ता है, अतः ऐसे में दूरस्थ शिक्षा से छात्र के मन में विरक्ति हो जाती है, इस तरह की विरक्ति को दूर करने एवं समस्याओं के समाधान के लिए कुछ विशेष क्षेत्रो से सहायता प्रदान किया जाता है। ऐसे बहुत से लोग है जो शिक्षा प्राप्त करने इच्छुक है, परन्तु नियमित रुप से विद्यालय नहीं जा सकते है ऐसे लोगो के बेहतर भविष्य निर्माण के लिए दुरवर्ती शिक्षा मिल का पत्थर साबित हुआ है, दुरवर्ती शिक्षा यह पूरे विश्व में सबसे बड़ी मुक्त शिक्षा प्रणाली है।
पुस्तकालयों में र्प्याप्त मात्रा में अध्ययन सामग्री एवं अन्य संशाधन जसे – रेडियो, विडियो , आडियों विडियो कान्फ्रेसिंग की सुविधा रखी जाती है।

सुझाव : दुरवर्ती शिक्षा के लिए सभी अध्ययन केन्द्रों में पुस्तकायल की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए,

पुस्तकालय आधुनिक टेक्नालॉजी के साथ हो एवं सभी पाठयकम के परामर्शदाता सप्ताह में एक बार वहॉ उपलब्ध हो जिससे छात्रों की कठिनाइयों का समाधान सरलता से हो। छात्र वहॉ उपस्थित नहीं हो पाता है तो ई–मेल या फोन द्वारा भी अपनी समस्या का त्वरीत समाधान कर सके। पुस्तकाय में छात्र परामर्श केन्द्र की स्थापना हों और वहॉ शिक्षक उपस्थित रहें। पुस्तकाय में कोर्स के अतरिक्त पठन पाठन की सामग्री उपलब्ध हो, विषय से सबंधित संगोष्ठी एवं ज्ञानवर्धक रोचक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए।

वहॉ काउंसलर नियुक्त हो जो उनके भविष्य के लिए भी मार्गदर्शन करा सके। इन सभी योजनाओं को क्रियान्वित करने के लिए धन की आवश्यकता होती है अतः केन्द्रसरकार एवं राज्य सरकार को इसे हेतु र्प्याप्त मात्रा में बजट दुरस्थ शिक्षा को दिया जाना चाहिए।

निष्कर्ष :

मुक्त विश्वविद्यालयों की स्थापना का मुख्य उद्देश्य प्रदेश के दूरस्थ एवं ग्रामीण अंचलों में शिक्षा आपके द्वार एवं साक्षरता की दर में वृद्धि करना करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति में विश्वविद्यालय ग्रंथालय एक महत्वपूर्ण अवयव के रूप में माना जा सकता है। ग्रंथालय सेवा के बिना शिक्षा के क्षेत्र में निहित उद्देश्यों की पूर्ति नहीं की जा सकती। अतः विश्वविद्यालय ग्रंथालय सेवा को संपूर्ण विकसित एवं आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित करना चाहिए। साथ ही राज्य सरकार मुक्त विश्वविद्यालय ग्रंथालय के उद्देश्य को पूर्ण करने हेतु अधिकाधिक वित्तीय प्रबंध सुनिश्चित करे। है। इन मुक्त विश्वविद्यालय ग्रंथालयों में त्रिस्तरीय ग्रंथालय सेवा की अवधारणा को पूर्ण विकसित एवं आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित किया जा रहा है। इन ग्रंथालयों के विकास में वित्तीय प्रबंध एक मुख्य समस्या है, जिसके बिना समन्वित विकास संभव नहीं है, अतः राज्य सरकारों को इन मुक्त विश्वविद्यालय ग्रंथालयों को सुदृढ़ एवं उपयोगी बनाने के लिये अधिकाधिक वित्तीय प्रबंध ग्रंथालय मद हेतु सुनिश्चित करे एवं ग्रंथालयों में योग्य ग्रंथपाल एवं कर्मचारियों की नियुक्ति हो सके। अध्ययन केन्द्रो पर पर्याप्त सूचना संचार व्यवस्था बढ़ाया जाना चाहिए, परामर्शदाताओं की पर नियुक्ती प्रत्येक क्षेत्रीय अध्ययन केन्द्र के पुस्तकालयों हेतु किया जाना चाहिए, पुस्तकें घर ले जाने की अनुमति दी जाए, पुस्तकालय में बैठने की पर्याप्त व्यवस्था रखी जाए।

संदर्भ :

इण्डियन लाइब्रेरी एसोशिएशन, सेक्सेशनल कमेटी ऑन डिस्टेंस एजुकेशन : गाइडलाईन फार लाइब्रेरी सर्विसेस टू डिस्टेंस लर्नर्स, इंदिरा गांधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली, 2001.

इग्नू, सूचना तकनीकी, 4 बी.एल.आई.एस., 2003, पृष्ठ 32–53.

शर्मा, बी.के. एवं यादव, सुरेन्द्र सिंह : दूरस्थ शिक्षा के विकास में नेटवर्किंग द्वारा संसाधन सहभागिता में योगदान, ग्रंथालय विज्ञान, 38 (1–2), 2007.

शर्मा अरविन्द, : सूचना संप्रेषण एवं सूचना समाज, इ एस.एस. पबलिकेशन नई दिल्ली।

शर्मा, एस.के., कम्प्यूटर एवं पुस्तकालय नेटवर्क, विश्व प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 83–94.

त्रिपाठी, एस.एम., प्रलेखन एवं सूचना सेवाएं तथा नेटवर्क, वाय.के. पब्लिसर्स, आगरा, 1997, पृष्ठ 103.

त्रिपाठी, एस.एम., सूचना प्रणालियां एवं नेटवर्क, खण्ड–2, वाई.के. पब्लिसर्स, आगरा, 1997, पृष्ठ 100–125.

ग्रंथालय विज्ञान, खण्ड–39, 2008, पृष्ठ 71, 73.

Sharma, Balakrishnan, Networking and the future of Libraries, ESS. ESS Publication, New Delhi, 2000.

Goel, S.K., Networking and Internet Management, Anmol Publication, New Delhi, 2000.

Rao, I.K., Ravichandran, Library Automation.

Reaach Digest,Issou ,4 2014

WWW.dec.ac.in

LBP PUBLICATION